साहित्य में मिथकीय आकर्षण

डॉ उषा शर्मा
व्याख्याता.हिंदी साहित्य
राजण महाविद्यालय
मांडलगढ़

वर्तमान समय की घोर भौतिकता से त्रस्त विश्व स्थिति में जब रचनाकार अपने आसपास मानवीय पीड़ाए तनावए घुटनए ऊब और सामाजिक दंश से घिरे परिवेश को देखा है तब वह उससे उबरने के लिए छटपटा उठता है। इस छटपटाहट से मुक्ति पाने के लिए तथा अपने समकालीन अंतर विरोधों को अभिव्यक्ति देने के लिए वह अतीत की अपनी जातीय धरोहर की ओर देखता है। कालातिपात के साथ समय की मांग के अनुरूप समर्थ रचनाकार अपनी सिसृक्षा की पूर्ति के लिए आवश्यक होने पर इन्हें अवचेतन से निकलकर इनमें नई प्राण शक्ति फूंकते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ष्इस संबंध में समष्टिचित् की बात कही है। वह कलाकार के हृदय में उठने वाली मिथकीय सिसृक्षा को अचेतन चित् की वेगवती शक्ति का परिणाम मानते हैं।ष[1] ष्वास्तव में मिथक मनुष्य की भाषा है जिसके माध्यम से वह जीवन और प्रकृति के रहस्य के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं और अलौकिक गाथाओं को अभिव्यक्त करता था। यह यथार्थ के प्रति सामूहिक अवचेतन मन का सहज स्फूर्त सृजनात्मक रचना है।ष[2]

अपनी समझ को दूरगामी और ऐतिहासिक बनाने के लिए साहित्यकार मिथकों में आधुनिक मूल्यों का आरोहण करके उन्हें वर्तमान विचारधारा के नए स्तर पर जोड़ने का प्रयास करते हैं। अपने सार्थक अतीत के साथ एक मुक्त सरोकार बनाते हैं। मिथक के भीतर चूंकी सामूहिक मन सक्रिय रहता है। इसीलिए वह एक बहुत ही नाजुक और विवादास्पद माध्यम भी है। यही कारण है कि कोई भी साहित्यकार इसे एक माध्यम के रूप में तभी चुनता है जब उसे अपने अन्तस में उठे प्रश्नों को अभिव्यक्ति देने के लिए देश काल के एक बहुत बड़े रचना पटल की आवश्यकता होती है। प्रत्येक कवि के लिए यह कोई आसान कार्य नहीं होता। वर्तमान क्रियाकलापों को अतीत की कथाओं से जोड़कर कल्पना के रंग में रंगते हुए साहित्यकार इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक उसे सत्य माने लगता है डॉक्टर प्रभाकर श्रोत्रिय ने ठीक ही लिखा है कि ष्कविता में मिथक का प्रयोग करना क्षुर.धार पर चलने की मुश्किलों से कुछ कम नहीं है।ष[3]

मिथक शब्द ग्रीक शब्द मिथोस से आया है जिसका अर्थ है लोगों की कहानीए कल्पनाए कथन या किवदंति साहित्य में मिथक शब्द का उपयोग एक पारंपरिक कहानी का वर्णन करने के लिए किया जाता हैए जिसका उद्देश्य आमतौर पर एक प्राकृतिक या सामाजिक घटना की व्याख्या करना होता है। साहित्यिक मिथकों में अलौकिक प्राणियों का उपयोग आम है और समय अवधि आमतौर पर विभिन्न सभ्यताओं की शुरुआत के प्रारंभिक इतिहास की अवधि से जुड़ी होती है। वास्तव में साहित्य में मिथक ऐसी कहानी है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती है और दुनिया में किसी उत्पत्ति या प्राकृतिक घटना की व्याख्या करने का प्रयास करती है। मिथक में लगभग देवी देवताओं का उल्लेख होता है। हर संस्कृति और धर्म में किसी न किसी तरह के शासक देवता या देवगनए देवी देवताओं का समूह होता है और उन्हीं की कथाओं को आधार बनाकर साहित्य में मिथक की रचना की जाती है। मिथक रूपगत स्वरूप में दन्तकथाए देवकथाए गल्पकथाए पुराण कथाए पुनराख्यानए अतिमानवीयए दैवीयए लौकिक या पारलौकिक गाथाओं का समन्वित रूप होते हैं। ऐतिहासिक घटनाओंए तथ्यों एवं कथ्यों के माध्यम से सत्यों का उद्घाटन ही मिथक का प्रमुख उद्देश्य होता है। मिथक और प्रतीकात्मकता मिथक में प्रतीक विधान का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथक का प्रयोग साहित्य में कई रूपों में हो रहा है। इतिवृत्त.रूप मेंए प्रतीक.रूप में आद्यबिम्ब. रूप मेंए फेंटेसी. रूप मेंए प्रच्छन्न. रूप में आदि। ष्कदाचित यह कहना अधिक सच होगा कि आज कवि की सृजनात्मक जरूरत मिथक के बिना पूरी नहीं हो रही है। वैसे तो संपूर्ण विश्व का कलात्मक सृजन प्रारंभ से ही मिथकीय रहा है।ष[4]

साहित्यकार मिथकों को एक माध्यम के बतौर इसलिए चुनता है ताकि वह उनके पीछे छिपे मानवीय सत्य की खोज कर सके और संप्रेषण का एक माध्यम व्यापक आधार प्राप्त कर सके। इसके अतिरिक्त अतीत का पुनः मूल्यांकन करना युग दृष्टियों का भेद समझना और अपने से चिपकी हुई अतीत की रूढ़िवादी स्मृतियों का संहार करना भी आज के मिथक धर्मी रचनाशील मन का मुख्य उद्देश्य होता है। यहां यह तथ्य विशेष रूप से ध्यातव्य है कि मिथक की अर्थवत्ता बहुस्तरीय होने के साथ.साथ असीम भी होती है। इसीलिए वह हमेशा रचनाकारों के लिए आकर्षण का विषय बना रहा है। आज का साहित्यकार अपनी रचना में मिथक के किसी धार्मिक आधार को स्वीकार नहीं करके रचना की मूल संवेदना के आधार पर मिथक से उसको जोड़ना स्वीकार करता है। वहीं मिथक के द्वारा उन्हें धार्मिक तथा सांप्रदायिक विश्वासों को चुनौती देता हुआ भी कई स्थानों पर दिखाई देता है। साहित्यकार का वैचारिक धरातल जैसे.जैसे पुष्ट होता गया वैसे.वैसे वह मिथकों के और अधिक करीब होता गया। मैथिलीशरण गुप्तए जयशंकर प्रसादए दिनकरए दुष्यंत द्वारा प्रवर्तित काव्य मिथक के मुहावरों को त्याग कर अपने साहित्य में नवीन संवेदना के प्रति और मिथकों की भाषा में स्वर प्रदान करते दिखाई देते हैं। कई कवियों की कविता में मिथकों से ही काव्य भाषा को नई शक्ति मिली और आधुनिक मूल्य बोध के प्रति सजग होते हुए सभी को आत्म निरीक्षण का अवसर मिला। डॉण् कृष्ण दत्त पालीवाल को यह जानकर राहत मिलती है कि ष्कविता की वैचारिक प्रखरता के साथ उपजता हुआ समस्त जीवनबोध अनभिव्यक्त रह जाने की स्थिति में पहुंच गया होताए यदि इधर के कवियों ने अतीत के मूल्यवान मिथकों को न चुनकर ग्रहण किया होता।[5]

साहित्य में मिथकों के प्रयोग की परंपरा उतनी ही पुरानी है जितना कि स्वयं साहित्य। कोई भी कालजई कवि केवल अपने समय की ही बात नहीं करता बल्कि वह अतीत और भविष्य दोनों को देखा हुआ साहित्य रचता है। वह मिथक में निहित आदर्श या आद्य प्रारूप पर अपने हस्ताक्षर अंकित करके अतीतए वर्तमान और भविष्यगामी समय को एक साथ मुखरित करता है। रामायण और महाभारत भारतीय समाज के लिए एक अच्छे और समृद्ध मिथक कोष के समान है अधिकांश साहित्यकारों ने प्राय अन्य मिथक से चुनकर अपनी काव्याभिव्यक्तियां की है एक कवि इसे खुले मन से स्वीकार करते हुए कहता भी है कि ष्एक रामायण मेरे भीतर एक महाभारत मेरे चारों तरफ।[6] हिंदी साहित्य में हरिऔध जी ने श्प्रिय प्रवासश के माध्यम से राधा और कृष्ण के पवित्र प्रेम को बहुत आकर्षक और समाज सुधारक रूप में प्रस्तुत किया है। वहीं मैथिली शरण गुप्त ने श्साकेतश महाकाव्य के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम राम के उत्कृष्ट चरित्र का वर्णन करने के साथ.साथ कैकेयीए उर्मिला जैसे उपेक्षित पात्रों का भी बहुत ही उत्तम चरित्र चित्रण कर उन्हें भी प्रतिष्ठित किया है। इसी प्रकार कालजयी कवि जयशंकर प्रसाद की श्कामायनीश सृष्टि के प्रथम पुरुष मनु और श्रद्धा के चरित्र का चित्रण मनोभावो के माध्यम से सृष्टि का निर्माण करते हुए बहुत ही सुंदर संदेश देते हुए निर्मित किया है। इन रचनाओं के माध्यम से इन कवियों ने न केवल चरित्र चित्रण किया है अपितु समाज को एक नवीन दृष्टि और उनके पात्रों द्वारा स्थापित आदर्श की स्थापना करने का भी प्रयत्न किया है। इसी प्रकार राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर ने कुरुक्षेत्र और रश्मिरथी महाकाव्य के माध्यम से जो संदेश दिए हैं वह आज भी हमारी मानवता के लिए अप्रतिम है। कुरुक्षेत्र मेंए युद्ध के कारण और परिणाम का जो चिंतन प्रस्तुत किया है वह मिथक के माध्यम से शायद ही दूसरा कवि प्रस्तुत कर सकता है .

ष्वह कौन रोता है वहां.

इतिहास के अध्याय परए

जिसमें लिखा है नौजवानों के लहू का मोल है

प्रत्यय किसी बूढ़े कुटिल नीतिज्ञ के व्यवहार काय

जिसका हृदय उतना मालिन जितना की शीर्ष व लक्ष्य हैय

जो आप तो लड़ता नहींए

कटवा किशोरों को मगरए

आश्वस्थ होकर सोचताए शोणित बहाए

लेकिन गई बच लाज सारे देश कीघ[7]

कवि के अनुसार ष्कुरुक्षेत्र की रचना भगवान व्यास के अनुकरण पर नहीं हुई है और न महाभारत को दोहराना ही मेरा उद्देश्य था। मुझे जो कुछ कहना था वह युधिष्ठिर और भीम का प्रसंग उठाए बिना भी कहा जा सकता थाए किंतु तब यह रचना शायद प्रबंध के रूप में नहीं उतरकर मुक्तक बनकर रह गई होतीए तो भी यह सच है कि इस प्रबंध के रूप में लाने की मेरी कोई निश्चित योजना नहीं थी बात यूं हुई कि मुझे अशोक के निर्वेद ने आकर्षित किया और श्कलिंग विजयश नामक कविता लिखते लिखते मुझे ऐसा लगा मानो युद्ध की समस्या मनुष्य की सारी समस्याओं की जड़ हो। इसी क्रम में द्वापर की ओर देखते हुए मैंने युधिष्ठिर को देखा जो श्विजयश इस छोटे से शब्द को कुरुक्षेत्र में बिछी लाशों से तौल रहे थेए किंतु यहां भीष्म के धर्म. कथन में प्रश्न का दूसरा पक्ष विद्यमान था। आत्मा का संग्राम आत्मा से और देह का संगम देह से जीता जाता है। यह कथा युद्धांत की है। युद्ध के आरंभ में स्वयं भगवान ने अर्जुन से जो कुछ कहा था उसका सारांश भी अन्याय के विरोध में तपस्या के प्रदर्शन का निवारण ही था।[8]

युद्ध एक निंदित और क्रूर कर्म है किंतु इसका दायित्व किस पर होना चाहिए उसे पर जो अनीति का जाल बिछाकर प्रतिकार को आमंत्रण देता है या उसे पर इस जाल को छिन्न.भिन्न कर देने के लिए आतुर है उसे.

ष्पापी कौन मनुष्य से

उसका न्याय चुराने वाला

या कि न्याय खोजते विघ्न का

शीश उड़ने वालाघ[9]

अपने काव्य में इन मिथकों के माध्यम से ही तो कवि नवीन दृष्टि और नई दिशा अपने पाठकों को देते हैं। कुरुक्षेत्र में न जाने कितने ऐसे मनोभावों को व्याख्यायित किया है जो हमारे हृदय में एक द्वंद उत्पन्न करते हैं जैसे.

ष्व्यक्ति का धर्म तपए करुणाए क्षमा

व्यक्ति की शोभा विनय भीए त्याग भीए

किंतु उठना प्रश्न जब समुदाय काए

भूलना पड़ता हमें तप.त्याग को।श[10]

मिथक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानांतरित होते हुए सामूहिक अवचेतन में सदा सुरक्षित रहते हैं। इसी क्रम में आधुनिक कविता के अनेक रचनाकारों ने भी मिथक के माध्यम से जीवन के बहुविध संघर्षों और संशयात्मक मनरू स्थितियों को अभिव्यक्त किया है। श्मुक्ति प्रसंगश. राजकमल चौधरीए श्संशय की एक रातश श्महाप्रस्थानश. नरेश मेहताए श्एक पुरुष औरश. विनयए श्सूर्यपुत्रश. जगदीश चतुर्वेदीए श्आत्मदानश. बलदेव वंशीए श्सपने में वाल्मीकिश. रमेश चंद्र शाहए श्विश्वनाथश. मृत्युंजय उपाध्यायए श्लुकमान अलीश. सौमित्र मोहनए श्सखीश. विजय देवनारायण शाहीए श्एक पौराणिक वेदनाश श्इतिहास की पुनर्रचनाश .रामदेव आचार्यए श्जटायुश. हरीश भदानीए श्चक्रव्यूहश. जगमोहन चोपड़ाए श्मैं नया अभिमन्युश. कुंवर नारायणए श्सूरज एक सलीबश. शैलेश जैदीए श्युद्ध जारी हैश. केवल गोस्वामी आदि ऐसी ही प्रमुख रचनाएं हैं। इसी प्रकार कुमार विकल महाभारत में वर्णित युद्ध की ही तरह अपनी कविता में आज के मनुष्य की समानांतर लड़ाई लड़ते हैं। यही स्थिति केवल गोस्वामी की भी है। आज के समाज में मनुष्य की भौतिक पिपासा बहुत प्रबल है। वह भौतिक सुख साधनों के पीछे मृग मारीच मरीचिका में फसे राम की तरह भाग रहे हैंए लेकिन कुछ हासिल नहीं होता। उसका व्यामोह में फंसने और निरंतर उसके पीछे भागने का क्रम अनवरत जारी है ;युद्ध जारी हैद्ध।

फेंटेसी रूप में मिथक प्रयोग मुक्तिबोध ने अपनी परंपरा का प्रचलन करके किया है। इसी परंपरा में श्री राम तिवारीए विजेंद्रए वेणुगोपालए कुमार विकलए हरिहर द्विवेदी आदि ने इस धारा को प्रवाहमान किया है। इन कवियों की अनेक रचनाओं ने फंतासी से ही जन्म लिया है और फंतासी में ही अपनी आंखें खोली है। फंतासी के माध्यम से उनमें अनुभावात्मक तत्कालिकता वैचारिक निश्चयता में रूपांतरित होकर प्रस्तुत हुई है। मणि मधुकर की श्पुनः पशु लोकश्ए राजकमल चौधरी की श्मुक्ति प्रसंगश और कुमार विकल की श्दिल्ली दरवाजाश इस श्रेणी की श्रेष्ठ रचनाएं हैं। डॉक्टर रमेश कुंतल मेघ के शब्दों में ष्फैंटसी आज के रचना कुल कवि की ईमानदारी तथा बलिदान की पहचान है जो इस पैशाचिक संसार को देखते.समझते हुए उसके मानवीय प्रति संसार का संभाव्य रण रोपती है।ष[11]

कवि का मुख्य प्रतिपाद्य वर्तमान यथार्थ के समानांतर एक मिथकीय परिवेश उपस्थित करना तथा ऐतिहासिक और मिथकीय संदर्भों को नए सिरे से पुनर्गठित करना होता है। इस प्रकार मिथक का इतिवृत्तात्मक विवरण नए अर्थ के व्यंजना के रूप में प्रस्तुत होता है ना कि प्राचीन कथात्मक तथ्यों के रूप में। श्जनजीवन के समकालीन प्रश्नों से जूझनेए हमारी जाति तथा वर्गीय चेतना को अग्रसर करने तथा उन्हें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए समकालीन कवि बौद्धिक कुशलता के साथ बार.बार मिथक प्रयोग करता रहा है। आज यह धारणा भी खंडित हो गई है कि आधुनिकता और विज्ञान के साथ मिथक का कोई विरोध है। यही कारण है कि मार्क्सवाद और अस्तित्व वाद जैसे आधुनिकता के समकालीन वैश्विक प्रतिमानों में मिथकधर्मी रचनाशीलता का मेल है।श[12] मिथक बहुत शीघ्र पुराना नहीं पड़ताए क्योंकि प्रत्येक युग की नई आकांक्षाएं उसे नए अर्थ से जोड़ती हैए नवीनता प्रदान करती है। हर युग का कवि अपने विशिष्ट संवेदना के अनुरूप मिथकीय प्रतीकों चयन करता है। वस्तुतरू प्रतीकात्मकता में ही मिथक की शक्ति निहित है। प्रतिकों के द्वारा ही मिथक के सत्य एवं उद्देश्य की पहचान होती है। यथार्थ और वास्तविकता के प्रति अधिक आग्रह होने के कारण साहित्य में मिथकीय रूपांतरण यथार्थ के दंश और विविध वैचारिक आयामों को उद्घाटित करता है। डॉण वीरेंद्र सिंह के शब्दों में श्यह मिथकीय रूपांतरण एक ऐसी यथार्थ दृष्टि है जिसमें यथार्थ और आंतरिकता को रचनात्मक धरातल पर अभिव्यक्त किया गया है।श[13] वर्तमान युग की जटिल स्थितियों संकुल मनोवृतियों तथा खंडित चेतना को सृजनात्मक स्वर प्रदान करने के लिए मिथक की और उन्मुख होना कोई नई बात नहीं है। साहित्य में प्रयुक्त मिथक आधुनिक जीवन के अनुभव से जुड़कर अपनी एक सर्वथा नई वस्तु चेतना का विकास कर लेने के कारण अतीत को कम और वर्तमान को अधिक प्रमुखता के साथ मुखर करते हैं।

इस प्रकार साहित्य की मिथक प्रधान रचनाओं से गुजरते हुए हम पाते हैं कि प्रतीकए आद्यबिम्बए फेंटेसी आदि विभिन्न रूपों में मिथकीय प्रयोग की प्रवृत्ति आकर्षण पैदा करती हुई अधिक प्रबल हुई है। इसका कारण संभवतरू यह है कि आज के साहित्यकार के लिए आधुनिक जीवन मूल्यों और युग संदर्भों को जनमानस में गहरी बैठे किसी मिथक में रुपायित कर देना अधिक सुविधाजनक होता है कविता में मिथकवादी धारणा इतिहास में बार.बार प्रयुक्त होती रही है। जहां मिथक कथा या घटना के माध्यम से साहित्यकार उद्धत भाव या विचार की अभिव्यक्ति कर सकता है। वहीं दूसरी ओर मिथक का आधार अपने समय संदर्भ को व्याख्यायित करने में सक्षम होता है। इसीलिए प्रबंध काव्य में मिथक का अधिकतर उपयोग हुआ है तथा रचनाओं सफल और प्रभावशाली रही है।

संदर्भ

1 हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली खंड साथ पृष्ठ संख्या 86

2 आधुनिक हिंदी आलोचना के बीच पृष्ठ संख्या 77

3 डॉ प्रभाकर क्षेत्रीय रचना एक यातना है पृष्ठ संख्या 91

4 डॉक्टर अनिल कुमार तिवारी . समकालीन कविता में मिथकीय अर्थ रूपांतरणए निबंध से

5 समकालीन हिंदी कविता संवादए संपादक डॉ विनय पृष्ठ संख्या 40

6 विनय. कई अंतराल कविता से पृष्ठ संख्या 75

7 रामधारी सिंह दिनकर. कुरुक्षेत्रए प्रथम सर्गए प्रारंभ छंद

8 रामधारी सिंह दिनकर. कुरुक्षेत्रए प्रारंभिक निवेदन से

9 रामधारी सिंह दिनकर. कुरुक्षेत्रए द्वितीय सर्ग

10 रामधारी सिंह दिनकर. कुरुक्षेत्रए तृतीय सर्ग

11 डॉ रमेश कुंतल मेघए श्क्योंकि समय एक शब्द हैश पृष्ठ संख्या 473.474

12 डॉ अनिल तिवारी.समकालीन कविता के मिथ्या अर्थ रूपांतरणए निबंध से

13 डॉ वीरेंद्र सिंह. सृजन और अंतर अनुशासनीय परिप्रेक्ष्यए निबंध से